हर क़ौम में पैग़म्बर भेजा गया है

प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल है.
क़ुरआन 10:47

अल्लाह ने समय-समय पर हज़ारों की संख्या में हर क़ौम के अन्दर दया और करुणा के रूप में पूरी मानव जाती के मार्गदर्शन हेतु अपने पैग़म्बर भेजे. कुछ विशेष परिस्थितियों में पैग़म्बरों के सन्देश को लोग गुम कर देते, भुला देते, विकृत कर देते, उपेक्षित कर देते या उसका बिलकुल इनकार ही कर देते थे. यही कारण थे जिनकी वजह से अल्लाह अपने सन्देश को पुनः पहुँचाने के लिए नए नबी को भेजता था.

अल्लाह ने जितने भी नबी भेजे हैं मुसलमान उन सबका सम्मान करते हैं. जितनी भी ईश्वरीय ग्रन्थ हैं जो नबियों पर अवतरित हुए मुसलमान उन सब पर भी ईमान (आस्था) रखते हैं, यहाँ पर हमें इस तथ्य को भी जान लेना चाहिए कि क़ुरआन के अतिरिक्त इस समय दुनिया में कोई भी ग्रन्थ अपनी असली शक्ल में मौजूद नहीं है.

"उसने तुमपर हक़ के साथ किताब उतारी जो अपने से पहले की (किताबों की) पुष्टि करती है, और उसने तौरात और इंजील उतारी."
(क़ुरआन ३:३)

ईश्वरीय प्रकाशना हर व्यक्ति पर क्यों नहीं होती ?

अल्लाह ने जीवन प्रदान किया और हर इन्सान को सोचने-समझने की आज़ादी दी, ताकि आज़मा कर देखा जा सके कि कौन है जो अपनी इच्छा से ईश्वर के रास्ते को अपनाता है और कौन उस रास्ते से भटकता है. यदि हर व्यक्ति को सीधे तौर से प्रकाशना की जाती तो जीवन में परीक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता. किसी के ईमान और आस्था की परीक्षा इसी में है कि प्रत्यक्ष रूप से बोलने और बताने के बजाए अल्लाह ने सोचने और समझने की जो योग्यता दी है उससे विचार करे और ख़ुदा की निशानियों को पहचाने. यदि ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से लोगों को स्वयं बताता तो इसमें किसी कोशिश की ज़रूरत ही नहीं थी और इस तरह ख़ुदा पर ईमान (आस्था) रखना अर्थहीन होकर रह जाता.

हालाँकि पैग़म्बरों पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशना अवतरित होती है लेकिन इससे वे जीवन-परीक्षा से छूट नहीं जाएँगे, जबकि पैग़म्बर बहुत-सी मुसीबतों और परेशानियों का सामना करते हैं.

अन्तिम ईशदूत

जबकि क़ुरआन और पैग़म्बर के तरीक़े पूरी तरह सुरक्षित और सरलतापूर्वक सुलभ एवं प्राप्य है तो अब किसी नए नबी की आवश्यकता ही नहीं है

नबियों को विशेष क़ौम या जातियों की ओर भेजा जाता था, लेकिन कुछ समय बीतने के बाद नबियों के सन्देश को लोग या तो गुम कर दिया करते थे या उसमें मिलावट कर दिया करते थे. जबकि पैग़म्बर मुहम्मद(स)को विशेष क़ौम या जाति के लिए नहीं भेजा गया बल्कि पूरी मानव जाती के लिए भेजा गया और उनके सन्देश को क़ुरआन और सुन्नत (तरीक़े) की शकलमें सुरक्षित कर दिया गया.

• क़ुरआन अल्लाह के बोले हुए शब्द हैं और यह हर प्रकार की मिलावट, त्रुटि या विरोधाभास से पाक है. यह एक पुस्तक है "मार्गदर्शन है पूरी मानव जाती के लिए..... सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ."
क़ुरआन 2:185

• ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जो कुछ कहा और करके दिखाया उसके संकलन को 'सुन्नत' कहा जाता है, जिसे उनके साथियों ने रिकॉर्ड करके संकलित किया था. यह एक तथ्य है कि हज़ारों की संख्या में और पूर्ण रूप से प्रमाणित इस संकलन के अनुसार पैग़म्बर मुहम्मद (स) की शिक्षाओं का ठीक-ठीक अनुसरण करना हर किसी के लिए सरल है.

ईशदूत मुहम्मद का सन्देश अपने से पूर्व के ईशदूतों के सन्देशों के साथ पूर्ण रूप से सामंजस्य रखता है और उनके सन्देशों की पुष्टि करता है.

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आज की नस्ल के लिए भी और भविष्य में रहती दुनिया तक की पूरी मानव जाति के लिए अन्तिम पैग़म्बर हैं. वे ईमानदार, न्यायशील, दयामय एवं करुणामय, सत्यवान और बहादुर इन्सान का पूर्ण पूर्ण उदाहरण थे. वे अपने से पहले नबियों और ईशदूतों की तरह किसी प्रकार का कोई अवगुण नहीं रखते थे और उन्होंने जो भी संघर्ष किया केवल अल्लाह के लिए ही किया.

निष्कर्ष

सभी पैग़म्बरों को ईश्वर की अनुकम्पा के रूप में उसका सन्देश पहुँचाने सन्देश लेकर लोगों को यह बताने के लिए भेजा गया कि एक पवित्र एवं न्याय-परायण जीवन किस प्रकार व्यतीत किया जाए. वे अपने चरित्र में सबसे अच्छे होते थे जिनका अनुसरण और आज्ञापालन किया जाना चाहिए. पैग़म्बर का अनुसरण करना वास्तव में ईश्वर का आज्ञापालन है और उनको न मानकर रद्द कर देना वास्तव में ईश्वर की अवज्ञा और उसके आदेशों की अवहेलना है. पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ईशदूतों में अन्तिम ईशदूत हैं, इस प्रकार उनके आने से ईश्वरीय मार्गदर्शन पूर्ण हो गया है और अब हमारी मोक्ष का दारोमदार पूर्ण रूप से ईश्वर और उसके अन्तिम ईशदूत मुहम्मद (स) की आज्ञापालन में है.

निस्सन्देह तुम्हारे लिएअल्लाह के पैग़म्बर में एक उत्तम आदर्श है, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखताहो और अल्लाह को अधिक याद करे.
(क़ुरआन 33:21)

हमसे सम्पर्क करें
इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

इस्लाम में ईशदूतत्व की धारणा

हज़रत नूह
हज़रत इबराहीम
हज़रत मूसा
हज़रत ईसा
हज़रत मुहम्मद

इन सब पर ईश्वर की ओर से सलामती और शान्ति हो

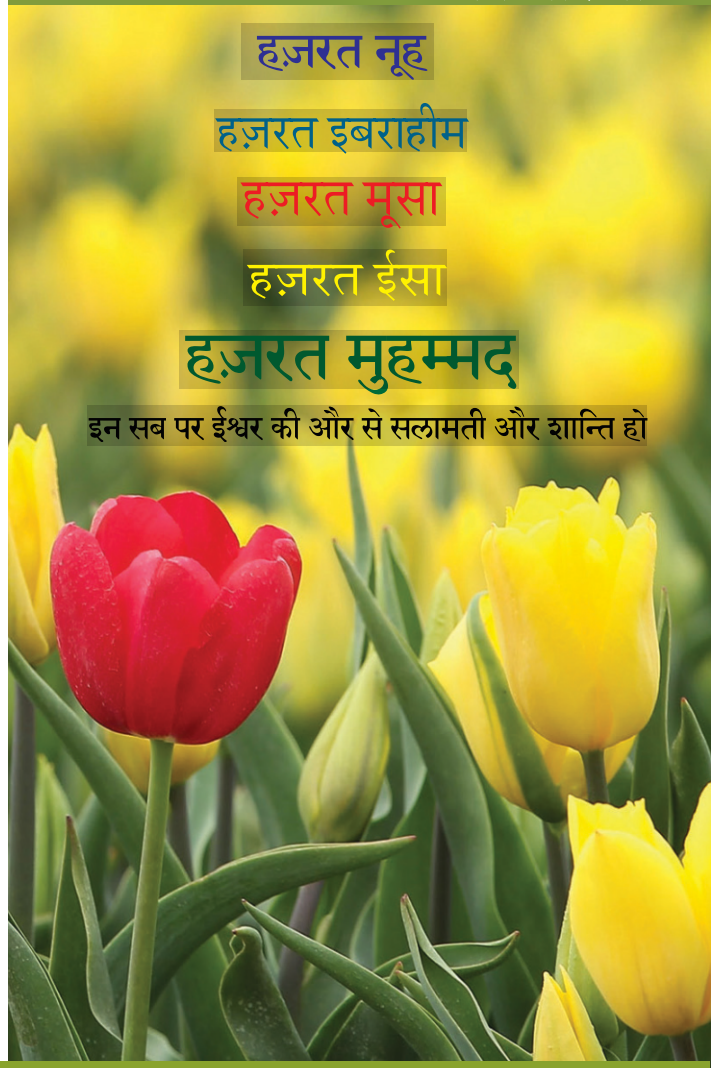

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000
040 - 6832 7832
www.discovertruepath.com
You Tube : DiscoverTruePath

इस जगत और जगत में मौजूद हर चीज़ के पैदा करनेवाले ईश्वर ने मनुष्य को अत्यन्त महान उद्देश्य के लिए पैदा किया है। वह यह कि उसी एक अकेले ख़ुदा की पूजा-उपासना की जाए तथा उसी की शिक्षाओं एवं मार्गदर्शन के अनुसार एक पवित्र जीवन व्यतीत किया जाए। मगर कोई भी व्यक्ति इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकता जब तक कि अल्लाह की ओर से स्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त न करे। अल्लाह, जो कि अत्यन्त दयावान और न्यायशील है, मनुष्य को धरती पर निरुद्देश्य घूमने के लिए नहीं छोड़ दिया है। हमें हमारे उद्देश्य से अवगत कराने, अपना सन्देश पूरी मानव जाती तक पहुँचाने तथा उस पर अमल करके दिखाने के लिए अल्लाह ने कुछ विशेष लोगों को नियुक्त किया। यही विशिष्ट लोग नबी या पैग़म्बर कहलाते हैं। जिनमें हज़रत आदम, नूह, इबराहीम, मूसा, ईसा मसीह और मुहम्मद हैं।

(इन सब पर ईश्वर की ओर से शान्ति और सलामती हो)

सभी पैग़म्बरों में सामान गुण पाए जाते हैं जो उन्हें आम इन्सानों से भिन्न बनाते हैं

पैग़म्बरों के गुण

पैग़म्बरों पर प्रकाशना का अवतरण होता है

एक साधारण मनुष्य और पैग़म्बर के मध्य सबसे बड़ा अन्तर यह होता है किपैग़म्बर पर ईश्वर की ओर से प्रकाशनाका (वह्य) अवतरण होता है।

पैग़म्बरों का चरित्र महान होता है

पैग़म्बर अपने लिए कभी कुछ नहीं चाहते, जैसे दौलत, सत्ता का उच्च पद इत्यादि – इसके विपरीत वे उसका बदला केवल ईश्वर से चाहते थे.

पैग़म्बर समाज में सच्चाई और न्यायपरायणता का उच्च उदहारण होते थे। वे ईश्वर के मार्गदर्शन में अत्यन्त उच्च नैतिक जीवन व्यतीत करते थे। और अपनी ज़बान के पक्के तथा व्यवहार के सच्चे होते थे। इसलिए मुसलमान पैग़म्बरों के सम्बन्ध में बताए जाने वाले सभी ग़लत और झूटे आरोपणों को रद्द करते हैं, जो कि अन्य धार्मिक पुस्तकों में पाए जाते हैं।

पैग़म्बर चमत्कार दिखाते हैं

बहुत-से पैग़म्बरों ने चमत्कार दिखाए हैं प्रायः उसी क्षेत्र में जिसमें उनके लोग दक्ष होते थे. उदहारण के लिए मूसा (अ) की क़ौम के लोग जादू के क्षेत्र में दक्ष और माहिर होते थे; इसलिए मूसा (अ) ने वह कमाल का चमत्कार दिखाया कि जादूगर हैरान रह गए. हज़रत ईसा(अ) की क़ौम के लोग चूँकि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में सिद्धहस्त थे इसलिए हज़रत ईसा(अ) ने चिकित्सा विज्ञान में वह कमाल दिखाया कि उनकी क़ौम के लोगों की क्षमता से परे था.

मुहम्मद (सल्ल०) की क़ौम के लोग चूँकि कविता में कुशल थे इसलिए मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों के सामने ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत किया जो ऐसे वाक्पटु शब्दों से पूर्ण था जिसका मुक़ाबला बड़े-बड़े कवि नहीं कर सके. इसके अतिरिक्त बहुत-से पैग़म्बरों ने भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणियाँ कीं जो सत्य सिद्ध हुईं. ये चमत्कार वे अल्लाह की सहायता और उसकी अनुमति से दिखाते थे यह सिद्ध करने के लिए कि वे इन्सान ही हैं, उनके अन्दर कोई दिव्य शक्ति नहीं है.

पैग़म्बर दैवीय नहीं हैं

हालाँकि सभी पैग़म्बर अल्लाह की ओर से चुने हुए होते थे, लेकिन उनके अन्दर कोई दिव्य शक्ति नहीं होती थी, इसलिए उनकी पूजा-उपासना नहीं की जानी चाहिए. पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने आदेश दिया कि वे कह दें कि

"मैं केवल तुम जैसा ही एक इन्सान हूँ. मुझपर प्रकाशना (वह्य) अवतरित होती है कि तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है...." (क़ुरआन 18:110)

यही बात बाइबल (नए नियम और पुराने नियम दोनों) में भी कही गई है कि पैग़म्बर दिव्य नहीं थे, और पूजा या सजदा उसी एक सच्चे ख़ुदा को किया जाएगा.

"फिर वह थोड़ा आगे गया और मुँह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा..." (मत्ती 26:39)

"यह सुनते ही मूसा और हारून ने मुँह के बल ज़मीन पर गिरकर परमेश्वर से विनती की..." (गिनती 16:22)

"अब्राम ने अपना मुँह ज़मीन की ओर झुकाया। तब परमेश्वर ने उससे बातचीत की..." (उत्पत्ति 17:3)

पैग़म्बरों की विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं

अल्लाह सभी नबियों को अपना मिशन पूरा करने के लिए निश्चित प्रकार की विशेषताएँ प्रदान करता है, जैसे दृढ़ता और अटलता, साहस, नेतृत्व क्षमता, धैर्य और बुद्धिमत्ता.

कुछ उदहारण इस प्रकार हैं :

नूह(अ) की अपनी क़ौम के लोगों को अल्लाह की तरफ़ लगातारबुलाते रहने में दृढ़ता, लेकिन फिर भी बहुत-ही कम लोगों का क़बूल करना.

इबराहीम (अ) का साहस जिन्होंने अकेले ही पूरे समाज में फैली झूटी आस्थाओं का सामना किया जबकि वे अभी बहुत-ही छोटी उम्र के थे.

मूसा(अ) का कुशल नेतृत्व जिन्होंने अपनी क़ौम के अत्यन्त दबे-कुचले और ज़ुल्म का शिकार लोगों का अपने वक़्त के बादशाह फ़िरऔन से मुक्ति दिलाने में किया.

ईसा (अ) का सब्र जो उन्होंने अपने ही लोगों द्वारा दी गई कठिनाइयों और यातनाओं पर किया.

मुहम्मद(स) की 'बुद्धिमत्ता', जो उन्होंने अरब के बहुत-से ऐसे परस्पर प्रतिद्वंद्वी क़बीलों को एक करके उनको एक शान्तिमय समुदाय बना देने में दिखाई जो एक लम्बे समय से लड़ते और मारते चले आ रहे थे.

पैग़म्बरों का सन्देश

हमने हर समुदाय में कोई न कोई पैग़म्बर भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो और तागूत (झूटे ख़ुदा) से बचो." (क़ुरआन 16:36)

एक और अकेले ख़ुदा की तरफ़ से जब से पैग़म्बरों के भेजे जाने का सिलसिला शुरू हुआ है, तभी से एक ही सन्देश और एक मिशन लोगों को पहुँचाया जाता रहा है और उसी सन्देश को याद दिलाया जाता रहा और लोगों को उनके जीवन का उद्देश्य बताया जाता रहा है.

- ईश्वर के सम्बन्ध में सही धारणा को स्पष्ट करता है और ग़लत धारणा को रद्द करता है.
- जीवन का सही उद्देश्य बताता है.
- अल्लाह की इबादत करके दिखाता है.
- अल्लाह की तरफ़ से अच्छे और बुरे कर्मों की परिभाषा को लोगों तक पहुँचाता है.

हमने जो रसूल भी भेजा, उसकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ ही भेजा, ताकि वह उनके लिए अच्छी तरह खोलकर बयान कर दे. क़ुरआन 14:4

- अल्लाह की आज्ञाकारिता पर मिलनेवाले प्रतिफल (स्वर्ग) की ख़ुशख़बरी देता है और अवज्ञा पर मिलनेवाले दण्ड (नरक) से डराता है.
- प्राण, आत्मा, फ़रिश्ते, मृत्यु के पश्चात भविष्य जीवन और भाग्य जैसे ग़लत समझे गए विषयों की असली व्याख्या करता है.

सभी पैग़म्बरों ने एकेश्वरवाद की धारणा को ही स्पष्ट करने पर ध्यान केन्द्रित किया था: कि उसका न तो कोई साझी है और न कोई बराबर का और यह कि इबादत और पूजा-उपासना केवल उसी की होनी चाहिए. क़ुरआन में इस प्रकार के बहुत-से उदहारण मौजूद हैं जिनमें पैग़म्बरों द्वारा यही सन्देश दिया गया है-

हज़रत नूह (अलैहि) ने कहा-

"ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं." (क़ुरआन, 7:59)

हज़रत इबराहीम (अलैहि) ने कहा-

उसने कहा : फिर क्या तुम अल्लाह से इतर उसे पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके ?

हज़रत मूसा (अलैहि) ने फ़रमाया-

"क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और उपास्य ढूढूँ, हालाँकि उसी ने सारे संसारवालों पर तुम्हें श्रेष्ठता प्रदान की ?" (क़ुरआन 7:140)

हज़रत ईसा (अलैहि) ने कहा -

"निस्सन्देह अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी करो. यही सीधा मार्ग है." (क़ुरआन 3:51)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा -

"मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है. अतः जो कोई अपने रब से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए." (क़ुरआन 18: 110)

यही वह सन्देश है जो तमाम नस्लों को दिया जाता रहा है और ईश्वर के सम्बन्ध में सही धारणा के महत्व को उभारा जाता रहा है .